गंदी बस्ती में निवासरत लोगों का सामाजिक, आर्थिक एवं स्वस्थ्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के भिलाई नगर के विशेष संदर्भ में

डॉ. सुचित्रा शर्मा
सहायक प्राध्यापक
शा.वि.या.ता.स्नात्कोत्तर समाजशास्त्र स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग छ.ग.

डॉ. हेमलता बोरकर
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग

ओमप्रकाश
शोध–छात्र
समाजशास्त्र अध्ययन शाला पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग

शोध सरांश – प्रस्तुत शोधपत्र में गंदी बस्ती मे निवासरत **लोगों से लिया गया है।** वर्तमान में औद्योगिक केन्द्रों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हुई है एवं उसी के अनुपात में मकानों का निर्माण नही हो पाने के कारण वहां अनेक गंदी बस्ती बन गयी है। विष्व के प्रत्येक प्रमुख नगर में नगर के पांचवें भाग से लेकर आधे भाग तक की जनसंख्या गंदी बस्ती अथवा उसी के समान दशाओं वाले मकानों में रहती है । नगरों की कैन्सर के समान इस वृद्धि को विद्वानों ने पत्थर का रेगिस्तान व्याधिकी नगर नरक की संक्षिप्त रुपरेखा आदि कहकर पुकारा है। **अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के अध्ययन से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथ्यों के संकलन हेतु साक्षत्कार–अनुसूची का प्रयोग किया गया है शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लोगों का स्वस्थ्य निम्न स्तर का है तथा लोगों को सामाजिक, आर्थिक समस्यओं का समना करना पड़ता है।**

प्रमुख शब्द– गंदी बस्ती, **निवासरत लोग, सामाजिक, आर्थिक, स्वस्थ्य समस्या।**

प्रस्तावना – गंदी बस्ती वर्तमान में वैश्विक समुदाय की एक प्रमुख समस्या बन गई है, आज विश्व का ऐसा कोई भी देश नहीं हैं, जो पूर्णतः गंदी बस्ती की समस्या से मुक्त हो। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट मार्च 2010 के अनुसार 227 मिलियन, (22 करोड़ 70 लाख) जनसंख्या विश्व के गंदी बस्ती में निवास करती है। इसी तरह अन–हेवीटेट रिपोर्ट के अनुसार 20 मिलियन से ऊपर फिलीपिंस के लोग गंदी बस्ती में निवास करते है, तथा अकेले मनीला शहर में 50 प्रतिषत से अधिक 11 मिलियन आबादी बस्ती मे निवास करती है। 2001 की जनगणना के अनुसार 42,5,78,150 जनसंख्या गंदी बस्ती में रहने वाले लोगों की संख्या 93 मिलियन है, जो ब्रिटेन की जनसंख्या से दोगुनी है।

औद्योगिक नगरों में इन बस्तियों को अलग– अलग नामों से संबोधित किया जाता है। उदाहरण के लिए मुंबई में गंदी बस्तियों को 'चाल' कहा जाता है जबकि कलकत्ता में इन्हे केवल 'बस्ती' के नाम से पुकारा जाता है। कानपुर में ऐसी बस्तियाँ 'पुरवा' और 'अहाता' के नाम से जानी जाती है तथा दिल्ली में यह क्षेत्र 'कटरा' के नाम से जाना जाता है। देश की इन गंदी बस्ती की सर्वाधिक जनसंख्या मुबंई शहर मे निवास करती हैं, जहॉ 54.6 प्रतिशत लोग गंदी बस्ती मे निवासरत हैं, इसी तरह कोलकाता में 32.8 प्रतिशत, सूरत में 20.89 प्रतिशत पूणे में 19.39 प्रतिशत, चेन्नई में 18.88 प्रतिशत एवं दिल्ली में 18.74 प्रतिषत लोग गंदी बस्ती में निवास करते है। विश्व बैंक द्वारा जारी वर्ष 2004–05 के अपने रिपोर्ट में कहा है कि भारत देश में कुल गरीबी का 26 प्रतिशत गरीबी नगरीय क्षेत्र में होने का उल्लेख किया है।

गन्दी बस्तियों में मकान अंधेरे व सीलनयुक्त होते है। उनमें शौचालय, स्नानघर, पानी, बिजली, हवा एवं रोशनी की पर्याप्त सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। साथ ही इनमें मच्छर खटमल, जुंओं, छिपकलियों, चूहों और बीमारी के कीटाणुओं की बहुलता पायी जाती है। निवास की यह अर्द्ध मानवीय दशा है। यह मानव जाति की शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कमजोर पीढ़ी को जन्म दे रही है

गन्दी बस्ती की विशेषताएं–

गन्दी बस्ती की अवधारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ नेल्स एण्डरसन द्वारा उल्लेखित विशेषताओं का वर्णन करेंगे:

1. **बनावट** – यह सभी गन्दी बस्तियों की सार्वभौमिक विशेषता है । भवन चौगान एवं गलियों की दृष्टि से बनावट अधिक प्राचीन युगों पुरानी और गिरी हुइ दिखायी देती है।

2. **आर्थिक स्थिति–** सामान्यतः गन्दी बस्ती मे कम आय वाले लोग रहते है। यघपि कुछ ऐसे भवन भी हो सकते है जो जीर्ण–शीर्ण है किन्तु उनमे रहने वाले लोग गरीब नही है। फिर भी गन्दी बस्ती एक गरीबी का क्षेत्र होता है। देसाई व पिल्लई लिखते है गन्दी बस्ती कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण एंव सार्वभौमिक विशेषता गरीबी है। गन्दी बस्तियों मे रहने वाले लोग बाजार द्वारा तय किया हुआ किराया देने मे असमर्थ होते है।

3. **अत्यधिक भीड़–**भाड़युक्त– गन्दी बस्ती के क्षेत्र मे मकानों की भीड़–भाड़ अथवा मकानों में लोगां कि भीड़–भाड़ होती है और लोग वहाँ खाली पड़ी जमीन पर अनधिकृत कब्जा किए होते हैं।

4. **स्वास्थ्य और सफाई–**गन्दी बस्ती मे जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट होता है दूसरे निवासों की तुलना मे स्वच्छता और सफाई की सार्वजनिक सेवाओं का अभाव होता है। अनेक कारणों से यहाँ बीमारी व मृत्यु–दर अधिक होती है। अमरीका के सिरदर्द का इलाज करने वाले अस्पताल ने बताया कि 92 प्रतिशत सिरदर्द के मरीज गन्दी बस्ती के थे।

गन्दी बस्तियों के विकास के कारक–

गन्दी बस्तियों का निर्माण एवं विकास अनेक कारकों का परिणाम है। उनमें से प्रमुख निम्नांकित है

1. **औद्योगीकरण एवं नगरीकरण–** औद्योगिक एवं नगरीकरण ने गन्दी बस्तियों को जन्म दिया। उद्योगों में काम करने के लिए गांवों से आने वाले लोगों को निवास के लिए जब कम किराए पर अच्छे मकान उपलब्ध नही हो पाते तो वे गन्दे मकानों में रहने लगते हैं अथवा खाली पड़ी भूमि पर अनाधिकृत कब्जा कर कच्चे मकान बना लेते हैं नगर की परिधि एवं उद्योगों के आस पास उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा ऐसी ही बस्तियों का निर्माण किया जाता है।

2. **ग्रामीण बेकारी–** ग्रामों में उद्योगों एवं कृषि के पतन के कारण लोग व्यवसाय की तलाश में नगरों में आने लगतें है और नगरो में आने पर भी वे अपनी ग्रामीण निवास की आदतों को नही छोड़ पाते हैं और ऐसी बस्ताया बनाकर रहने लगते हैं जिन्हें हम ग्रामीण गन्दी बस्तियां कहतें है।

3. **जनसंख्या में वृद्धि–** जनसंख्या में वृद्धि जितनी तीव्र गति से हुई उसी तीव्र गति से मकानें का निर्माण नही होने से लोगों के लिए आवास का अभाव पैदा हुआ और लोग भीड़ भाड़ युक्त माकनों में अथवा एक ही मकान में कई परिवार मिलकर रहने लगे फलस्वरुप गन्दी बस्तियां पनपी।

4. **श्रमिको की अधिकता–** नगरों में श्रमिकों की अधिकता होती है। वे अपने कारखाने एवं काम के स्थान के पास ही रहना चाहते है और वे गन्दी बस्तियों में रहना ही पसन्द करते है।

गन्दी बस्तियों के दुष्परिणाम–

1. **स्वास्थ्य का हांस–** आवास की दुर्व्यवस्था होने एवं गन्दी बस्तियों में रहने से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मानव के लिए शुद्ध हवा जल एवं रोषनी अति आवष्यक है। इनके अभाव में कई प्रकार की बीमारियां फैलती है और शरीर कमजोर हो जाता है। डॉ. अमर नारायण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक इण्डस्टियल हाउसिंग इन इण्डिया में लिखा है मुम्बई के आस पास बनी हुई चाले अहमदाबाद की भूमि के नीचे बने हुए मकानों की कतारें कानपुर लखनउ और हावड़ा की आन्तरिक बस्तियां जूट मिल के गांव वाले छप्पर कोयले की खनों के गन्दे धावरे तथा चेन्नई के औद्योगिक कस्बों के गन्दे छप्पर सभी तपेदिक और दुसरे ष्वांस रोगों के घर बन गए है। गन्दी बस्तियों में मृत्यु दर अन्य स्थानों की बजाय अधिक है।

2. **सांस्कृतिक स्तर में हास–** दयनीय आवास व्यवस्था के कारण लोगों के सांस्कृतिक स्तर में गिरावट आ जाती है। वेश्यागमन के कारण लोगों का नैतिक पतन हो जाता है ।

3. **आय में कमी–** आवास की बुरी व्यवस्था व्यक्ति की कार्य क्षमता घटाती है जिसके फलस्वरुप व्यक्ति की आय कम हो जाती है और वह गरीबी की स्थिति से छुटकारा पाने में असमर्थ होता है।

3 शोध अध्ययन का उद्देश्य :–

उत्तरदाताओं की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना ।
1 उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को ज्ञात करना ।
2 उत्तरदाताओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ज्ञात करना ।

4 शोध उपकल्पना :–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध उपकल्पना है.
1. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी होना।
2. सर्वेक्षित बस्तियाँ अशिक्षा, गरीबी, बीमारी के व्यापकता के कारण पिछड़ी हुई है।
3. गंदी बस्ती में निम्न स्तर आय वाले लोग रहते हैं।

5 अध्ययन पद्धति :–

शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को चार भागों में विभक्त कर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

1. अध्ययन क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय :–

प्रस्तावित शोध अध्ययन गन्दी बस्ती मे रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य के स्तर का समाजशास्त्रीय अध्ययन (भिलाई गन्दी बस्ती के विशेष संदर्भ में) विषय पर आधारित है ।

भिलाई नगर नगर मुबंई हावड़ा रेलवे मार्ग के मध्य स्थित है। नगर का क्षेत्रफल 226 प्रतिवर्ग किलोमीटर है तथा जन घनत्व 4967 वर्ग किलोमीटर है नगर का भौगोलिक विस्तार 21 अक्षांश 8 उत्तर से 81 अक्षांश 23 पूर्व के मध्य स्थित है। भिलाई नगर कि कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के जनगणना के अनुसार 418,565 नगर की कुल साक्षरता दर 72 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 78 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 65 प्रतिशत है। यह 38 प्रतिशत जनसंख्य झुग्गी झोपडी में निवास करती है

2. उत्तरदाताओं का चयन :– भिलाई नगर के एक झुग्गी झोपडी बस्ती से 100 परिवार का चयन अध्ययन हेतु किया गय हैं ।

3. तथ्य संकलन के उपकरण एवं प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गंदी बस्ती में रहने वाले लोगो के स्वास्थ्य संबंधित शोध परख तथ्यों को ज्ञात करने के लिए चयनित उत्तरदाताओं से तथ्य सकंलन के महत्वपूर्ण उपकरण साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

तालिका कमांक 1.17

उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों मासिक आय

क.	मासिक आय (रू में)	आवृत्ति	प्रतिषत
1	2000 रू. तक	70	70
2	2000 – 4000	12	12
3	4000 – 6000	11	11
4	6000 – 8000	7	7
	योग	100	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययनगत समूह में उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों का मासिक आय में 2000 रू. कि आय 70 प्रतिशत 2000– 4000 रू. कि आय 12, प्रतिशत 4000 – 6000 रू. के आय 11 प्रतिशत 6000 – 8000 रू. की आय 7 प्रतिशत है।

तालिका– कमांक –1.3.1

उत्तरदाताओं के मकान में उपलब्ध सुविधाएं

क.	सुविधाएं	हाँ		नहीं		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पर्याप्त कमरें	90	90	10	10	10	100
2	किचन	30	30	70	70	10	100
3	ड्राइंगरूम	–	–	100	100	10	100
4	बाथरूम	40	40	60	60	10	100
5	शौचालय	20	20	80	80	10	100
6	पेयजल	40	40	60	60	10	100
7	नल	60	60	40	40	10	100
8	विद्युत	100	100	–	–	10	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं के मकान में उपलब्ध सुविधाओं में 90 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास पर्याप्त कमरे है शेष 10 प्रतिशत के पास पर्याप्त कमरे नहीं है इसी तरह अधिकतम 70 प्रतिशत उत्तरदाता के पास किचन नहीं है जबकि न्यूनतम 30 प्रतिशत उत्तरदाता के पास किचन की सुविधा है, प्रतिशत उत्तरदाता के पास ड a इंगरूम नहीं है। बाथरूम सुविधा में केवल 40 प्रतिषत उत्तरदाता पास सुविधा उपलब्ध है जबकि शेष 60 के पास नहीं है इसी प्रकार शौचालय की सुविधा में सर्वाधिक 80 प्रतिषत के आवास मे यह सुविधा उपलब्ध नहीं है जबकि केवल 20 प्रतिशत के पास

सुविधा उपलब्ध है। पेयजल सुविधा में अधिकतम 60 प्रतिशत के आवास में सुविधा नहीं है तथा न्यूनतम 40 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास मे यह सुविधा है, पेयजल हेतु नल की सुविधा में अधिकतम 60 प्रतिषत उत्तरदाता के आवास में यह सुविधा है जबकि षेष 40 प्रतिषत के पास सुविधा नहीं है तथा विधुत की सुविधा प्रतिशत उत्तरदाताओं के आवास में उपलब्ध है।

सुझाव–

गंदी बस्तियों के उन्मूलन हेतु निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते हैं–

1. स्वास्थ्य संबंधी, पेयजल संबंधी, शिक्षा संबंधी, साफ सफाई संबंधी समस्याओं में पूर्ण रूप से ध्यान दिया जाए।
2. भविष्य में नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों का विकास व्यवस्थित रूप से होना चाहिए।
3. नगरों में गंदी बस्तीयों को समाप्त कर शासन के सहयोग से इनमें रहने वाले लोगों को सुविधा जनक मकान निर्मित कर आसान किश्तों में दिया जाए।
4. महिलाओं के स्वास्थ्य तथा शिक्षा संबंधित समस्याओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

निष्कर्ष– गंदी बस्ती में निवासरत लोगों की सामाजिक–आर्थिक एवं स्वस्थ्य संबंधि उपरोक्त विष्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लोगों कि स्थिति पर बस्ती के सामाजिक परिवेश का प्रभाव पड़ता । यह आर्थिक स्थिति निम्न स्तर कि है तथा स्वथ्य सुविध का अभव पाया गया । मूलभूत सुविधाओं कि कमी है जिसके कारण इन लोगों को स्वस्थ्यगत समस्यओं का समना करना पड़ता है ।

Referance :-

1. World News . Global . development un. Report march 2010
2. http. // Indian vision . com / news / article / national 98404.
3. Sensus of India 2001.
4. India Country over view . September – 2011 WWW. World.Bank org in.
5. State UTS – Wise Urban and Slum population IN India 2001.
6. WHO and unicef 2002 global . water supply . and sanitilation assessment 2000 Report Newyork WHO And unicef.
7. Dyos H. J Canadine ,David Reader 1982 http.// books goggle com.

डॉ. सुचित्रा शर्मा
सहायक प्राध्यापक
शा.वि.या.ता.स्नात्कोत्तर समाजशास्त्र
. स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग छ.ग.

डॉ. हेमलता बोरकर
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग

ओमप्रकाश
शोध–छात्र
समाजशास्त्र अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग